प्राक्कथन

भारतीय भक्ति साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन एवं सुदीर्घ है। इसमें अनेकानेक श्रेष्ठ भक्त-कवि हो गए। इनमें श्रेष्ठ संत मीराँबाई का नाम बडे आदर सहित लिया जाता है।

मीराँबाई का नाम लेते ही हमारे सामने कृष्ण मंदिर में करताल लिए एक देवी का सात्विक चित्र निर्माण होता है, जिसने लोक-लाज और समाज की उपेक्षा कर अनन्य भाव से अपने आराध्य को अपना सर्वस्व समर्पित किया था। मीराँबाई मध्ययुग की असाधारण, अद्वितीय भक्त थीं। उनकी कृष्ण के प्रति निष्ठा, सर्वात्म समर्पण, प्रेम की दिव्यता, भव्यता, प्रेमावेग की तीव्रता अनूठी है। उनकी यह अलौकिक भक्ति रूपी प्रीति बेजोड़ है। उनके दर्द में घुले हुए प्रीति गीत अपूर्व है, जिनकी प्रशंसा में शब्द कम पडते है।

जब भी मीराँबाई के गीतों, भजनों को मैं सुनती थी, तब उनमें भरी पीडा, व्यथा, दर्द, तडप से मन में करुणा उभर आती। उनके प्रति मन में आदर उत्पन्न होता। तब उनके दर्द को और करीब से जानने की तथा उनके विरह-व्यंजक भक्ति युक्त काव्य को पढने की इच्छा होती। इसका मौका एम्.फिल्. में आने पर मिला। एम्.फिल्. में लघु-शोध-प्रबन्ध के रूप में मीराँबाई की भक्ति पर शोध-कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध लिखने से पहले मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उठे --

(१) मीराँ की प्रामाणिक जीवनी एवं उनका कृतित्व क्या है ?
(२) भारतीय साहित्य परम्परा में भक्ति का उद्भव कब हुआ और उसका विकास कैसा है ?
(३) मीराँबाई के पदों में दर्शन और भक्ति का विवेचन किस प्रकार किया गया होगा ?

(४) मीराँबाई के पदों में निर्गुण-सगुण मक्ति का विवेचन किस प्रकार हुआ होगा ?

(५) मीराँबाई के पदों में माधुर्य-मक्ति का विवेचन किस प्रकार का होगा ?

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध में इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने की कोशिश की है। इन उत्तरों को पाने के लिए उपर्युक्त प्रश्नों के आधार पर लघु-शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा बनायी।

प्रथम अध्याय --

मीराँबाई की जीवनी एवं रचनाओं का परिचय।

द्वितीय अध्याय --

भारतीय साहित्य परम्परा में मक्ति।

तृतीय अध्याय --

मीराँबाई के पदों में अभिव्यक्त मक्ति के विभिन्न रूप।

उपसंहार --

इस प्रकार प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध चार अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में मीराँबाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार किया गया है। जीवन और काव्य एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। किसी भी कवि या साहित्यिक को जानने के लिए उसके काव्य को समझाना आवश्यक है। उसी तरह किसी व्यक्ति का काव्य समझने के लिए उसका जीवन परिचय पाना आवश्यक है। मीराँबाई का काव्य भी उनके जीवन का प्रतिबिम्ब है। मीराँ के जीवन में जो विपत्तियाँ आयीं, जो यातनायें ,कष्ट उन्हें उठाने पड़े तथा जिस साहस और बेपर्वाही से उन्होंने लोक-लाज,कुल-मर्यादा तोड़कर वह कृष्ण-प्रेम में लीन रहीं, इसका उल्लेख उनकी रचनाओं में मिलता है।

द्वितीय अध्याय में भक्ति का उद्भव, भक्ति का विकास तथा भक्ति की परम्परा आदि पर विचार किया गया है। वेदों, उपनिषदों से चली आयी भक्ति का उत्तरोत्तर विकास होता गया। भक्ति के अनेक प्रकार बने, पद्धतियाँ बनीं और फिर उसके अनुसार अनेकविध सम्प्रदाय बने, अनेक श्रेष्ठ भक्त बने। भारतीय साहित्य में भक्ति-साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है।

तृतीय अध्याय में मैंने मीराँबाई के पदों में अभिव्यक्त भक्ति के विभिन्न रूपों का विवेचन किया है। उनके पदों में परिलक्षित दार्शनिक विचार, निर्गुण-सगुण विवेचन तथा मीराँबाई की माधुर्य भक्ति-भावना आदि का विवेचन किया है। मीराँबाई के पदों में दार्शनिक विचार सहजता से आये हैं, वे प्रयत्नसाध्य नहीं।

मीराँ की भक्ति मूलत: सगुण परक है, पर निर्गुण भक्ति के कुछ अंश भी उनकी भक्ति में मिलते हैं।

माधुर्य भाव मीराँबाई की भक्ति का प्राण है। इसमें संयोग-वियोग दोनों पक्षों का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय उपसंहार का है। इसमें लघु शोध-प्रबन्ध का विषय का सारांश है।

लघु-शोध-प्रबन्ध के अन्त में संदर्भ ग्रंथों की तथा सहायुयक ग्रंथों की सूची दी है।

प्रस्तुत प्रबन्ध श्रध्देय गुरुवर प्रा.शरद कणबरकर जी की कृपा का फल है। प्रा.कणबरकर जी ने विषय की बारीकियों ,कठिनाइयों को समझाया। काव्य की गागर में सागर भरने की विशेषता को समझाया। अनेक व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने जो अनमोल मार्गदर्शन किया, अनगिनत गलतियों को सुधारा-सँवारा, बार - बार मुझे प्रोत्साहित किया, इसके लिए मैं उनकी अत्यधिक ऋणी हूँ।

पूज्य गुरुवर डॉ.व्ही.व्ही. द्रविड जी ने विशेष रूप से सहाय्यता की तथा मुझे प्रेरणा दी जिससे उनकी भी मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

आदरणीय गुरुवर डॉ.व्ही.के.मोरे, डॉ.के.पी.शाहा,प्रा.वेदपाठक, प्रा.श्रीमती भागवत, प्रा.तिवले जी का आशिर्वाद मेरे साथ रहा, उनकी भी मैं आभारी हूँ।

मित्र परिवार तथा परिवार के लोगों की भी मैं आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनायें मुझे सदैव मिलती रहीं।

इस लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक ग्रंथों का लाभ मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से हुआ। अत: ग्रंथालय के पदाधिकारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस शोध-प्रबन्ध के टंकन को सुचारु रूप से पूर्ण करनेवाले श्री.बाळकृष्ण रा.सावंन्त जी के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

प्रबन्ध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैंने प्रयास किया है। इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी परितोष हुआ तो मैं अपने श्रम सार्थक हुये ऐसा समझूँगी।

(कु. निशा खंडेराव मोरे)
शोध-छात्रा।

कोल्हापुर।
दिनांक :30:५:१९९०।